नाम पर रखें जायें जिन्होंने किसी भी क्षेत्र में देश की उन्नति के लिए संघर्ष किया हो तथा संग्राम में भाग लिया हो । मैं ने कहीं भी यह नहीं कहा है कि राष्ट्रपति जी ने नाम के पीछे किसी चीज का नामकरण नहीं होना चाहिए । मैं ने अपने भाषण में कहा है कि ऐसे लोग जिन्होंने तपस्या की है त्याग किया है और आज सरकार में हैं, उनके नाम रहने चाहिये लेकिन ऐसे लोगों के नाम नहीं रहनी चाहिए जिन्होंने न तपस्या की हो और न कोई त्याग किया हो बल्कि केवल मंत्री किसी तरह से बन गये हों त्यागियों की संख्या रोज-ब-रोज, उपाध्यक्ष महोदय, कम हो रही है (*Interruptions*) इसलिए मेरा ख्याल है. . .

उपाध्यक्ष महोदय : त्यागी अगर एक हो तो वह भी बहुत है, आप ज्यादा न करिये ।

श्री विभूति मिश्र : मैं यह नहीं कहता कि आगे हमारे देश में त्यागी पैदा नहीं होंगे । त्यागी आगे भी पैदा होंगे और ऐसे ऐसे भी होंगे जो हम से ज्यादा त्याग करेंगे और उनके नाम पर अगर नाम रखे जायें तो किसी को कोई एतराज नहीं होगा । जिन्होंने हिन्दुस्तान की आजादी के लिए काम किया है और जो चाहे आज जिन्दा हैं, उनके नाम के पीछे उनके नाम अगर रख दिये जाते हैं तो कोई एतराज की बात नहीं है । फर्ज कीजिये हमारे ऊपर कोई चढ़ाई करता है और हमारी सीमा पर जो हमारे जवान हैं या दूसरे लोग हैं वे उसका ही मुकाबला करते हुए वीर गति को प्राप्त हो जाते हैं, तो उनके नाम के पीछे भी ऐसी चीजों के नाम रखे जा सकते हैं । कैसा त्याग किया हो, कैसी तपस्या की हो इसका लेखा जोखा सरकार कर सकती है ।

यह सही बात है कि हमारे प्रधान मंत्री परसनैलिटी कल्ट के खिलाफ हैं । चूंकि वह इसके खिलाफ हैं, इसीलिए देश में सारा काम चल रहा है, बड़ी खूबी के साथ चल रहा है । वह महान नेता हैं । अगर वह तपस्वी और त्यागी नहीं होते तो दूसरी ही हालत आज हिन्दुस्तान की होती । उनके बल और बूते पर ही सारी चीज चल रही है ।

यहां पर टालस्टाय का नाम लिया है, रूसो का नाम लिया गया है ह्यूम साहब का नाम लिया गया है जो कि कांग्रेस के जन्म-दाता थे । इन सब के नाम के पीछे इन चीजों के नाम रखे जाने को किसी को एतराज नहीं है । एतराज इस बात से है कि नामकरण को आप सस्ता न करें । आपको कानून बनाना होगा ताकि बहुत सोच विचार के बाद ही किसी चीज का नाम करण किया जा सके ।

उपाध्यक्ष महोदय : अब क्या आप अपने प्रस्ताव को वापिस लेते हैं या नहीं लेते हैं ?

श्री विभूति मिश्र : वापिस लेता हूं ।

The resolution was, by leave, withdrawn.

15.47 hrs.

RESOLUTION RE: NATIONAL INTEGRATION DAY

श्री स० मो० बनर्जी (कानपुर): उपाध्यक्ष महोदय, मैं

उपाध्यक्ष महोदय : इसके लिए भी समय नियत नहीं किया गया है । क्या ४५ मिनट इसके लिए काफी होंगे ?

कुछ माननीय सदस्य : आधा घंटा काफी है ।

श्री स० मो० बनर्जी : राष्ट्रीय एकता दिवस सम्बन्धी यह प्रस्ताव है ।

उपाध्यक्ष महोदय : आपको पंद्रह मिनट काफी होंगे ?

श्री स० मो० बनर्जी : पंद्रह सोलह मिनट तो मुझे चाहियें ।

उपाध्यक्ष महोदय : बहुत अच्छा आप ले लीजिये ।

श्री स० मो० बनर्जी : मेरा संकल्प इस प्रकार है :

"इस सभा की यह राय है कि २५ मार्च को, जिस दिन स्वर्गीय गणेश शंकर विद्यार्थी ने साम्प्रदायिक एकता को स्थापित करने के लिये कानपुर में अपने प्राणों की आहुति दी थी, राष्ट्रीय एकता दिवस घोषित कर दिया जाए ।"

उपाध्यक्ष महोदय, मैं डाक और तार मंत्री जी का बहुत आभारी हूं कि चार साल तक मतवातर प्रश्न के बाद इस बार पहली मर्तबा २५ मार्च को जिस दिन विद्यार्थी जी ने अपने प्राणों की आहुति दी थी कम-अज-कम कोमैमोरेशन स्टाम्प पंद्रह नए पैसे का उन्होंने निकलवाया । हमारी केन्द्रीय सरकार के कोई मंत्री या हमारे पूज्य प्रधान मंत्री जी जब कभी कानपुर जाते हैं तो कहते हैं कि कि कानपुर शहर विद्यार्थी जी का शहर है । इस अवसर पर इसबार कानपुर जाने के लिए मैंने उनको पत्र भी लिखा था लेकिन ऐसा मालूम होता है कि शायद समय न होने के कारण वह वहां जा नहीं सके हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय, विद्यार्थी जी के जीवन के बारे में जब कोई बात होती है तो राष्ट्रीय आन्दोलन में जिन्होंने हिस्सा लिया या नहीं भी लिया, कम-अज़-कम उनकी कुर्बानी, उनके त्याग, उनकी तपस्या के बारे में मैं समझता हूं कि मेरा कुछ न कहना ही अच्छा है क्योंकि सभी इससे भली भांति वाकिफ हैं । मैं सिर्फ इतना ही याद दिलाना चाहता हूं माननीय सदस्यों को कि २५ मार्च १९३१ के दिन जब उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी थी तब उनका केवल एक हाथ ही मिला था, बाकी शरीर नहीं मिला और उस खबर को जब गांधी जी तक पहुंचाया गया तो उन्होंने जो कुछ कहा वह मैं इस सदन के समक्ष रखना चाहता हूं । उन्होंने कहा :—

"The death of Ganesh Shankar Vidyarthi was one to be envied by us all".

ठीक उसके १७ साल बाद गांधी जी ने भी अपने प्राणों की आहुति दी और वह भी हिन्दू मुसलमानों के फसादों को रोकने के लिए ।

16 hrs.

हम देश का निर्माण करना चाहते हैं और हम चाहते हैं कि हमारा देश दुबारा सुनहरा हिन्दुस्तान बन जाए और यहां पर लोग खुशहाल हों । इस सब के लिए यह जरूरी है कि साम्प्रदायिकता के खिलाफ हम मोर्चा लगायें और इसका एक ही तरीका है कि हम हिन्दुओं और मुसलमानों को समझाने की कोशिश करें और उन से कहें कि हमारी यह जो लड़ाई है, हमें जो आपस में लड़ते हैं, यह लड़ाई आखिर दाढ़ी और चोटी की नहीं है, बल्कि जो लड़ाई हमें लड़नी है वह रोजी और रोटी की लड़नी है । मैं समझता हूं कि अगर लोगों का ध्यान आर्थिक चीज़ों पर दिलाया जाए तो देश का एकीकरण आसानी से हो सकता है । आज जब इस प्रस्ताव के ऊपर बहस हो रही है, मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि हो सकता है साम्प्रदायिकता को बढ़ाने में हमारे माननीय और पूज्य प्रधान मंत्री जी का हाथ न हो लेकिन कांग्रेस को, कांग्रेसी हुकूमत को या रूलिंग पार्टी को मैं जरूर कहूंगा कि हम ने उन को आगाह किया था, उन को चेतावनी दी थी जब उन्होंने मुसलिम लीग से समझौता किया था, उस सड़ी हुई, गली हुई मुसलिम लीग की लाश को, जिसे दफना दिया था अचानक निकाल कर जब यह कहा गया कि यह मुसलिम लीग वह मुसलिम लीग नहीं ह जो फिर्कापरस्ती को आधार बना कर हिन्दुस्तान में रहेगी, यह तो तहजीब और तमद्दन के आधार पर रहेगी, तो कुछ लोगों ने, और मुझे ख्याल है मौलाना हिफजुर्रहमान साहब ने और बहुत से सदस्यों ने, उस की मुखालिफत की थी और कहा था कि यह जो फिर्कापरस्ती को उभारने की कोशिश की जा रही है, कहीं ऐसा न हो कि वह सड़ी हुई लाश हिन्दुस्तान भर में घूमने लगे ।

और उसी के साथ साथ हिन्दू सम्प्रदायवाद अखंड भारत के नाम से आगे चलने लगे । मुझे याद है कि एक बहुत पुरानी और मशहूर कहानी है हालैंड की । एक लड़की पैदा हुई और जब छ: साल की उम्र उस लड़की की थी तो वह इतनी बड़ी मालूम होती थी जैसे सोलह साल की हो । जब वह बड़ी हो गई और शादी की उम्र हो गई तो उस के पिता ने कहा तुम्हारी शादी होगी । लेकिन वह लड़की कुछ अजीब सी थी, कुछ शोख थी, उस ने जिद की और कहा कि अगर मैं शादी करूंगी तो सिर्फ शैतान से ही शादी करूंगी । उसे बहुत मनाया गया कि शैतान से शादी मत कर, मेरी बच्ची । मुझे यह डर नहीं है कि तुम्हारी शादी शैतान से हो जायेगी, लेकिन बाद में जो औलाद होगी उस का क्या होगा ? लेकिन वह लड़की नहीं मानी और उस की शादी शैतान से हो गई । कुछ दिनों बाद जब औलाद पैदा हुई तो देखा गया कि उस का मुंह अजीब किस्म का है, जो इन्सान से मिलता जुलता नहीं, सारे बदन में उस के बड़े बड़े रोयें थे, पैर की जगह खुर थे । जब उस लड़की ने अपनी औलाद को देखा तो हाय कर के मर गई । लेकिन वह औलाद आज भी हिन्दुस्तान में घूम रही है । इस लिये जब कांग्रेस ने मुसलिम लीग से शादी रचाने की कोशिश की तो उस की औलाद को हम ने देखा अलीगढ़ में ।

श्री त्यागी (देहरादून) : औलाद की हद्द तक नहीं पहुंची ।

श्री स० मो० बनर्जी : उस की औलाद को हम ने देखा जबलपुर में, चन्दौसी में और दूसरी जगहों में । मैं समझता हूं कि वह गलत फैसला था । फिर भी मैं कहता हूं कि हमारे देश के पूज्य प्रधान मंत्री जी चाहते हैं कि देश का एकीकरण हो और इस लिये वे चाहते हैं कि जीवन के आदर्श को ले कर हम चलें । मैं समझता हूं कि हम लोग इस में कामयाब होंगे ।

जब जनसंघ ने इस चुनाव में कानपुर शहर में मजहबी चीजों को उभारने की कोशिश की तो कानपुर शहर में जनता से एक ही बात हमने कही थी कि यह गणेश शंकर विद्यार्थी जी का शहर है और गणेश शंकर विद्यार्थी जी का शहर रहेगा । इस को हम नाथू राम गोडसे का शहर नहीं बनने देंगे, और यकीन मानिये हम ने उस को नहीं बनने दिया । तो मैं ही समझता हूं कि विद्यार्थी जी के बारे में सदा हम बात करते हैं । जब वोट और एलेक्शन का जमाना आता है तो हम को विद्यार्थी जी याद आते हैं । स्टैचू उनकी अनवेल करने हमारे पूज्य प्रधान मंत्री जी गये थे, तो जहां पर उन की स्टैचू लगाई जानी चाहिये थी, जहां पर कि महारानी विक्टोरिया की स्टैचू थी, और उस को हटा दिया गया था, वह जगह खाली थी, लेकिन विद्यार्थी जी की स्टैचू को वहां नहीं लगाया गया । उन को स्टैचू एक ऐसी जगह रक्खी गई । जहां पर कि लोगों को बतलाना पड़ता है कि फलानी जगह उन की स्टैचू है । जहां पर महारानी विक्टोरिया की स्टैचू थी वहां पर शायद कानपुर के एक बड़े सरमायेदार की स्टैचू लगाई जाय । उस सरमायेदार का खान्दान कोई अमर नहीं है, कभी वह मरेगा । उस के मरने के बाद उस की स्टैचू लगेगी । जब हमारे पूज्य प्रधान मंत्री जी कानपुर शहर में तशरीफ ले गये थे तो मैं चाहता था कि उन से इस बारे में कहूंगा लेकिन जब वे वहां जाते हैं तो हमारे और उन के बीच में पुलिस की दीवार खड़ी हो जाती है और मैं अपनी बात नहीं कह सकता । इस लिये मैं कहूंगा कि विद्यार्थी जी के जीवन को अगर हम देखें और उस पर सोचें तो पायेंगे कि देश के एकीकरण के बारे में विद्यार्थी जी ने अपनी जान दे दी, जिस एकीकरण के बारे में नारा सिर्फ कांग्रेस पार्टी का ही नहीं बल्कि मुख्तलिफ़ राजनीतिक पार्टियों का भी है जो कि देश के एकीकरण में विश्वास करती हैं ।

जब सन् १९३१ में जेल से निकलने के बाद विद्यार्थी जी अस्वस्थ थे, उसी वक्त वे कराची जा रहे थे कांग्रेस सेशन अटेंड करने के लिए । उसी वक्त उनको मालूम

[श्री स० मो० बनर्जी]

हुआ कि कानपुर में दंगा हो रहा है। मैं बड़ा बदनसीब हूं कि जब मैं कानपुर शहर में आया तो उस वक्त विद्यार्थी जी नहीं थे। या उस वक्त मैं बहुत छोटा था, इसलिये मुझे यह सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ कि मैं उनके दर्शन कर सकूं। लेकिन मैंने उनकी कहानी को वहां सुना कि उन्होंने दो हजार मुसलमान परिवारों को निकाला, तकरीबन दो हजार या डेढ़ हजार हिन्दू परिवारों को उन्होंने निकाला। २४ तारीख को जब वे जख्मी हुए थे तो कुछ लोगों ने उनसे कहा कि आप बाहर मत निकलिये। लेकिन उन्होंने कहा कि नहीं, मैं अपनी मंजिल तक पहुंचना चाहता हूं, और मेरी मंजिल दूर नहीं है। २५ तारीख को इस तरीके से उनको मारा गया कि उनका शव नहीं मिला, केवल एक हाथ मिला जिसको देख कर लोगों ने पहचाना कि यह विद्यार्थी जी का हाथ है। इसलिये मैं निवेदन करूंगा कि १५ नये पैसे का टिकट आप बनायें। मुझे उसकी खुशी है। अभी २५ मार्च को हम लोगों ने विद्यार्थी जी का मृत्यु दिवस मनाया। नागरिक समिति की ओर से मैं चाहता था कि नगर पैमाने पर उस दिवस को मनाया जाय, लेकिन हम नेशनल इन्टेग्रेशन की बात तो करते हैं मगर एक साथ कोई मीटिंग नहीं कर सकते। यह कितना बड़ा दुर्भाग्य है इस देश का। मैंने अपने कांग्रेसी भाइयों से निवेदन किया था कि आइये, विद्यार्थी जी के दिवस को, विद्यार्थी जी के मृत्यु दिवस को, मार्टर्स डे के रूप में एक साथ मनायें। लेकिन वह नहीं हुआ। मालूम नहीं कि उनके विचार संकुचित थे या हमारे, लेकिन जो होना चाहिये था वह हुआ नहीं। अभी भी एक प्रस्ताव नागरिक समिति की ओर से मैंने पेश किया था जो कि इस सदन में पढ़ना चाहता हूं :

"चौबे गोला, जिस जगह उनको मारा गया था, हम चाहते हैं कि वहां एक शान्ति स्तम्भ बनाया जाय।"

शायद मंत्री महोदय की ओर से यह कहा जायेगा कि आप प्रान्तीय सरकार से कहिये। प्रान्तीय सरकार से हम कहेंगे, लेकिन विद्यार्थी जी का जीवन प्रान्तीय पैमाने पर नहीं था। मैं तो कहता हूं कि गांधी जी के बाद या गांधी जी को छोड़ कर अगर हम देखें तो हिन्दू मुस्लिम एकता के बारे में, देश के एकीकरण के बारे में, कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है जिसने इतना त्याग या बलिदान किया हो। आखिर उनकी उम्र ही क्या थी? ४१ साल की। सन् १८९० में वे पैदा हुए थे, एक मामूली क्लर्क के बेटे थे, मैट्रिक तक मुश्किल से शिक्षा पाई थी, लेकिन प्रताप के द्वारा उन्होंने जो ज्वाला देश में फैलाई किसान के लिये लड़े चाहे वह बरेली में हों या मैनपुरी में हों, मजदूरों के सब से बड़े हमदर्द, सरमायेदारों के अत्याचारों के खिलाफ, अगर किसी ने कुछ किया तो विद्यार्थी जी ने किया। दूसरी तरह होम रूल आन्दोलन में उन्होंने हिस्सा लिया, लेकिन कभी साम्राज्यवाद से समझौता करने की कोशिश नहीं की। चुनाव हुए। चुनाव में वे जीते भी। उनके खिलाफ चुनीलाल गर्ग जैसा आदमी खड़ा हुआ जिसके पीछे सारे सरमायेदार थे, लेकिन दूसरी तरफ विद्यार्थी जी और उनकी गरीबों की टोली थी। यह अनोखा चुनाव हुआ था। इस लिये मैं कहूंगा कि ४१ साल की उम्र में जिन्होंने अपने जीवन की आहुति दी, आज उस चीज को लेकर हम आगे बढ़ सकते हैं।

आज विद्यार्थी बन्धुओं से कहा जाता है कि तुम राजनीति से अलग रहो, लेकिन यह जो राइट रिएक्शनरी फोर्सेज हैं, चाहे वह स्वतंत्र पार्टी हो चाहे जनसंघ हो चाहे हिन्दू महा सभा हो, वे उनके दिमागों को अपने कब्जे में करके उनको दूसरी ओर ले जाना चाहती हैं यह कह कर कि तुम कम्युनिस्ट पार्टी

से डरो, प्रगतिशील पार्टियों से डरो तुमको अपने देश की परम्पराओं के आधार पर चलना है । मैं समझता हूं कि हो सकता है कि नेशनल इंटिग्रेशन डे देश भर में हम मनायें। हम उस दिन विद्यार्थियों से साफ तरीके से कहें कि आज अगर देश को खतरा है तो वाम पन्थियों से खतरा है। आज प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि खतरा अगर देश को है तो राइट रिएक्शनरी फोर्सेज से, राइट से खतरा है । इस लिये मैं कहूंगा कि नेशनल इंटिग्रेशन का प्रस्ताव अगर मान लिया जाय तो अच्छा है । और मैं तो चाहता हूं कि सारे देश में एक शान्ति दल की स्थापना की जाय । हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई को एक करने के लिये, बंगाली, बिहारी, पंजाबी और तमाम दूसरे लोगों को एक करने के लिये आज जरूरत इस बात की है कि विद्यार्थी जी के जीवन को हम दोहराने की कोशिश करें ।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस प्रस्ताव को जब सदन के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूं तो मैं अपने कांग्रेसी भाइयों से निवेदन करना चाहता हूं कि यह कोई इलेक्शन से पहले की चीज नहीं है कि लोग यह समझें कि साहब इलेक्शन है । मैं एक ही चीज कहूंगा कि मैं विद्यार्थी जी के पद चिन्हों पर चलना चाहता हूं और आप भी चलते हैं, इसलिये यदि इस प्रस्ताव को मान लिया जाये तो देश में एकीकरण होगा ।

मेरी एक और छोटी सी मांग है और मैं समझता हूं कि यह सदन और हमारे प्रधान मंत्री जी मुझको खाली हाथ वापस नहीं करेंगे । स्वयं गांधी जी ने विद्यार्थी जी की प्रशंसा की है और कहा है कि कानपुर विद्यार्थी जी का शहर है । इसलिये मैं चाहता हूं कि उनकी एक तस्वीर सेंट्रल हाल में लगायी जाए ताकि हम लोग बार बार यह कह सकें कि साम्प्रदायिकता की आग को समाप्त करने के लिये जिसने अपनी जान दी उसकी तस्वीर लोक सभा के सेंट्रल हाल में है । लोग उसको देखा करेंगे और उससे प्रेरणा लेते रहेंगे । इन शब्दों के साथ मैं इस सदन से निवेदन करूंगा कि इसको मान लिया जाए और एक शान्ति दल कायम किया जाए ताकि वह हमारे नौजवानों के दिमागों को बदल सके ।

अन्त में मैं विद्यार्थी जी के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए निवेदन करूंगा कि विद्यार्थी जी केवल कानपुर के ही नहीं थे, वह उत्तर प्रदेश के ही नहीं थे वह सारे देश के एक सेनानी थे जिन्होंने साम्प्रदायिकता का सामना करने में अपनी जान की बाजी लगा दी। इसलिये मैं कहूंगा कि उनको नेशनल लीडर के स्टेचर का लीडर मान लिया जाए और सेंट्रल हाल में उनकी तस्वीर लगायी जाए और उनकी निधन तिथि को नेशनल इंटिग्रेशन दिवस के रूप में बनाया जाए। मैं विश्वास दिला सकता हूं कि कानपुर की जनता की यह भावना है और यदि इस प्रस्ताव को मान लिया गया तो कानपुर की जनता फिरकापरस्ती के मुंह पर तमाचा मार कर कहेगी कि कानपुर विद्यार्थी जी का शहर है, वह मुस्लिम लीग का या नाथूराम गोडसे का शहर नहीं बनेगा ।

Mr. Deputy-Speaker: Resolution moved:

> "This House is of opinion that 25th March, the day on which late Shri Ganesh Shankar Vidyarthi laid down his life in Kanpur to bring communal harmony be declared as National Integration Day."

Five minutes each. Shri Sadhan Gupta.

Shri Sadhan Gupta (Calcutta-East). Mr. Deputy-Speaker, I rise to support the Resolution, because the step proposed in the Resolution is just the need of hour. There is no doubt that after

[Shri Sadhan Gupta]

great efforts, we have kept the country clear of communalism, on the whole, and for that, the democratic forces in the different parties of the country are largely responsible. But, then, communalism remains the principal hindrance to our national integration. There are other things, some provincialism of a narrow kind and so on. But, principally, it is communalism that is the greatest hindrance to national integration. This is proved not only by the unfortunate occurrences that have taken place at Jabalpur, Meerut, Chandausi, Aligarh and so on, but it is also proved by the fact that communal parties have done so well in the elections in certain regions. That is a thing to be taken very serious notice of. Because, if these parties grow, it is a positive danger to our national integration. Our country is a country of different communities and the different communities must inhabit this country on a secular basis. This principle is being seriously menaced by the success of the communal parties in the elections, like the Jan Sangh and so on. For this reason, it is very necessary that the example of heroic persons who have fought against communalism should be held up before the people, to teach them what the ideals of our country really are.

The younger Members of this House are, perhaps, not aware of Ganesh Shankar Vidyarthi. We remember that, as children, his story, his martyrdom has made a tremendous impression on us which has lasted ever since. Even in those days when due to the Hindu-Muslim riots communalism was penetrating every heart, his sacrifice had made an impression on our minds. How much greater would be the impression today when we are relatively free from communalism! How much greater impression would his noble example stamp on young minds, and how much helpful that would be for national integration!

Therefore, it is entirely necessary that these examples are held up, and particularly the day of martyrdom of Ganesh Shankar Vidyarthi be declared a day of national integration.

Of course, mere declarations would not do. All the parties concerned, and particularly, the ruling party must set an example in this matter. The example of Kerala has not been a particularly edifying one, and if side by side with parading these heroes, we follow this kind of an example and we follow this kind of an opportunism and align ourselves with communal forces, then the whole purpose is defeated. So, this must be cleared off certainly. But assuming this is done, if the example of Ganesh Shankar Vidyarthi is held up to the people, if he is suitably honoured, and the people are told, particularly the young people are told of what he stood for, why he stood for it and how he stood for it, then I am sure a great step forward would be taken in the cause of national integration.

श्री जगदीश अवस्थी (बिल्हौर) : उपाध्यक्ष महोदय, आज जब द्वितीय लोक सभा के अवसान पर हम लोग अलग हो जाएंगे और यह सत्र समाप्त हो जाएगा, हमारे मित्र श्री एस० एम० बनर्जी साहब ने एक बहुत उत्तम प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, जिसमें सरकार से कहा गया है कि स्व० अमर शहीद श्री गणेश शंकर विद्यार्थी का जो २५ मार्च सन् १९३१ को कानपुर में निधन हुआ, उस दिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाए और उस दिवस को इस रूप में घोषित किया जाए कि सारे देश में उस दिन लोग विचार करें कि स्व० विद्यार्थी जी किस लिए बलिदान हुए थे ।

मैं सदन को स्मरण दिलाऊं कि जिस दिन विद्यार्थी जी का बलिदान हुआ उस दिन सारे मुल्क में एक तहलका मचा हुआ था और शायद हमारे माननीय सदस्यों को याद होगा कि उस दिन सरदार भगत सिंह राज गुरु और सुखदेव को पंजाब

में फांसी हुई थी । सारे देश में एक रोष था और कानपुर नगर में भी भीषण हड़ताल हुई थी । लेकिन अंग्रेजों ने, जो कि हमेशा हिन्दुस्तानियों को लड़ाते आए थे उस राजनीतिक हड़ताल को एक दंगे का रूप दे दिया और उस पवित्र राष्ट्रीय दिवस को बदनाम करने की दृष्टि से एक दंगा खड़ा करा दिया । यह अंग्रेज की एक बड़ी चाल थी मुझे विद्यार्थी जी के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ । लेकिन बहुत से माननीय सदस्यों को, जो आज यहां हैं, उनके साथ काम करने का अवसर मिला है । वे जानते हैं कि विद्यार्थी जी गांधीवादी होते हुए भी उग्रवादियों को हमेशा सहयोग देते रहे । उन्होंने हमेशा हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए काम किया और इसी काम को करते करते उनका कानपुर नगर में बलिदान हुआ । उस दिन वह मना करने के बावजूद मुस्लिम क्षेत्र में गये और वह कुछ हिन्दुओं को निकाल रहे थे कि कुछ पागल व्यक्तियों ने उनकी हत्या कर दी । इसके पूर्व विद्यार्थी जी ने कई मुसलमानों को हिन्दू क्षेत्र से बचाया था । इस प्रकार उनका बलिदान हुआ ।

गांधी जी ने उनके बारे में जो कुछ कहा वह हमारे मित्र ने पढ़ कर सुनाया है । इस प्रकार गणेश शंकर बलिदान हो गए ।

कुछ दुर्भाग्य हमारे देश का यह है कि जिन जिन महान पुरुषों ने अपने देश की आजादी के लिए या राष्ट्रीय एकता के लिए बलिदान किया उन बलिदानियों को हम भूलते जा रहे हैं । यह हमारी सरकार जो इस बात का दावा करती है कि यह जनता की सरकार है और यह आजादी का महल जिसमें कि हम सब आनन्द ले रहे हैं और जो महल के देश के बलिदानियों की कुर्बानियों पर बना है, हम अपने उन बलिदानी व्यक्तियों को भूलते जा रहे हैं । उन के लिए हम कुछ कर नहीं पा रहे हैं ।

जहां तक श्री गणेश शंकर विद्यार्थी, सरदार भगत सिंह या चन्द्रशेखर आजाद का प्रश्न है यह बलिदानी लोग आज भी देश की जनता के दिलों में समाये हुए हैं और जिनके कि बलिदानपूर्ण आदर्श जीवन हमारे मन को ओतप्रोत किया करते हैं लेकिन दुःख है कि इन बलिदानी पुरुषों का जो बलिदान हुआ वह हमारी राष्ट्रीय सरकार के मन को ओतप्रोत नहीं कर पा रहा है । हम इतने भोग में फंस गये हैं कि हम उन बलिदानी व्यक्तियों को भूलते जा रहे हैं । मैं तो चाहूंगा कि श्री बनर्जी जो प्रस्ताव लाये हैं वह बड़ा समयानुकूल है क्योंकि आज के दिन राष्ट्रीय एकता की हमें अत्यधिक आवश्यकता है । हमारे प्रधान मंत्री महोदय कहते हैं कि अभी भी हमारे देश में प्रथकत्व की भावना विद्यमान है, हिन्दू-मुस्लिम की भावना विद्यमान है और आज राष्ट्रीय एकता की स्थापना के लिए यह बहुत आवश्यक है कि यह हिन्दू-मुस्लिम की भावना खत्म हो । श्री बनर्जी का यह प्रस्ताव कि २५ मार्च का दिन जिस दिन को श्री गणेश शंकर विद्यार्थी कानपुर में हिंदू-मुस्लिम एकता की बलिवेदी पर शहीद हुए उस दिन को राष्ट्रीय एकता दिवस घोषित किया जाए, समयोचित है और मैं समझता हू कि इसको सरकार को तत्काल स्वीकार कर लेना चाहिए । ऐसा करके हम सिद्ध कर देंगे कि हम फिर एक बार इस देश के अन्दर राष्ट्रीय भावात्मक एकता स्थापित करना चाहते हैं । मैं चाहूंगा कि यह सदन अपने अन्तिम क्षणों में जब कि हम विसर्जित हो रहे हैं इस पवित्र प्रस्ताव को स्वीकृत करके एक नया आदर्श स्थापित करे ।

श्री गणेश शंकर विद्यार्थी केवल कानपुर और उत्तर प्रदेश के ही न होकर समस्त देश के हैं और मैं समझता हूं कि उनके सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई इस तरह की बात करना कि वह किसी एक जाति विशेष के या वर्ग विशेष के थे ऐसी बात नहीं है और

[श्री जगदीश अवस्थी]

मैं चाहूंगा कि जो प्रस्ताव मेरे मित्र श्री बनर्जी ने सदन के सामने रखा है उसको सदन मुक्त रूप से स्वीकार करके एक नया आदर्श देश के सामने रक्खे ।

श्री सूरज पाण्डेय : उपाध्यक्ष महोदय, मैं श्री बनर्जी के प्रस्ताव का समर्थन करने के लिए खड़ा हुआ हूं । जैसा कि हमारे माननीय सदस्य श्री बनर्जी ने आपको बताया है कि इस सदन को पता है कि श्री गणेश शंकर विद्यार्थी का बलिदान देश में हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने के प्रयत्न में हुआ । यह देश का बड़ा दुर्भाग्य है कि हमारे तमाम प्रयत्नों के बावजूद अभी तक सही मायनों में हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित नहीं हो पायी है और जब तब देश में हिन्दू-मुस्लिम झगड़े होते रहते हैं । कई माननीय सदस्यों ने बतलाया कि पिछले दिनों जबलपुर, अलीगढ़, मुरादाबाद और अन्य स्थानों पर भी नफरत की बिना पर साम्प्रदायिक झगड़े हुए । जैसा कि सब को मालूम है कि श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए अपनी जान गंवाई इसलिये यह जरूरी हो जाता है कि हम उनकी पवित्र यादगार के लिए एक दिन निश्चित करें और २५ मार्च को जिस दिन कि वे कानपुर में शहीद हुए उस दिन को हम राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप मे मनायें । कांग्रेस चूंकि देश की सबसे बड़ी पार्टी है और उसके हाथ में शासन की बागडोर भी है इसलिये उसकी इसके वास्ते सब से बड़ी जिम्मेदारी हो जाती है और वह चाहे तो इस काम को अच्छी तरीके से चला भी सकती है हालांकि उनके जो कारनामे हैं उनसे कोई बहुत उम्मीद तो नहीं की जा सकती है । मैं यह तो नहीं कहता कि कांग्रेस में तमाम व्यक्ति खराब हैं लेकिन मेरा अपना यह दावा जरूर है कि इसमें ज्यादातर लोग ऐसे हैं जो कि इन बातों को महत्व नहीं देंगे । खास तौर से कहीं कहीं तो यह चुनाव जीतने के लिए ऐसे साम्प्रदायिक दलों से समझौता करते हैं जिससे कि हमारे देश में यह जातिवाद और साम्प्रदायवाद बुरी तरह घर कर गया है । चुनावों के सिलसिले मे कांग्रेस वालों ने नाना प्रकार की जातियों के साथ गठबन्धन किया और साम्प्रदायिकता को उभारने वाली तकरीरें कीं । चुनाव जीतने की खातिर इन्होंने ऐसे ऐसे काम किये हैं जिनसे कि इस देश की प्रतिष्ठा गिरी है । लेकिन मैं समझता हूं कि यह चीज हमसे ज्यादा इन्हीं के लिये घातक सिद्ध होने वाली है । इनमें बहुत लोग प्रसन्न होते हैं कि अच्छा है कि जनसंघ को बढ़ने दो, एलेक्शन जीत लेने दो, कम्युनिस्ट पार्टी तो नहीं बढ़ने पायेगी । कुछ लोग कहते हैं कि स्वतंत्र पार्टी से ही मिल लो लेकिन उनको यह मालूम होना चाहिए कि इसका सबसे बड़ा आघात कम्युनिस्ट पार्टी पर न होकर उन्हीं पर होगा । कम्युनिस्ट पार्टी के हम लोग तो जनता के बीच में रहते हैं और उनमें काम करते हैं और आज नहीं तो कल अगर हमारा रास्ता सही है तो कामयाबी हमें अवश्य मिलेगी । जिन लोगों ने देश की आजादी के लिए और एकता के लिये अपनी जानें गवांई उनको हम आदर नहीं प्रदान करते तो इससे तो यह मालूम पड़ेगा कि सही मायनों में हम उन चीजों में विश्वास नहीं रखते हैं । इसलिए जरूरत इस बात की है कि हम इस २५ मार्च के दिन को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप मे मनायें । जैसा कि हमारे साथी ने सुझाव दिया हम उनके लिए और तो कुछ कर नहीं सकते तो कम से कम उनकी तस्वीर ही लगायें । आज जरूरत इस बात की है कि हम सारे देश में इस बात का प्रचार करें और लोगों के दिमाग मे यह बात लायें कि देश में हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित होना जरूरी है और तभी हम वास्तविक अर्थों में समाजवाद की ओर बढ़ सकते हैं । अब बात तो हम समाजवाद की करें और काम ऐसे करें जो कि हमें एक दूसरे से परस्पर लड़ाते रहें और जिनसे कि देश में परस्पर

फूट बढ़ती रहे तो लाजिमी तौर पर हमारा समाजवाद का नारा कोई अर्थ नहीं रखता है । इसलिए मैं सदन का ज्यादा वक्त न लेते हुए मंत्री महोदय से कहूंगा कि उन्हें सदन को यह आश्वासन देना चाहिए और इस को या तो पवित्र पर्व के रूप में घोषित करे या श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की पुण्य स्मृति को ताजा बनाये रखने के लिए और कुछ व्यवस्था करे ताकि आगे आने वाली सन्तानें उनके आदर्शमय बलिदान जीवन से प्रेरणा ग्रहण कर सकें और देश में राष्ट्रीय एकता स्थापित हो सके ।

श्री त्यागी : उपाध्यक्ष महोदय, जिन भावनाओं से प्रेरित होकर मेरे मित्र श्री बनर्जी ने यह प्रस्ताव रक्खा है उसकी तहे दिल से मैं ताईद करता हूं । जब भी हम श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के त्याग और बलिदान का जिक्र करते हैं तो हमें रोमांच हो आता है क्योंकि हमें वह पुराना समय याद आ जाता है जिस समय कि अंग्रेज शासकों की कूटनीति के कारण हिन्दू-मुसलमानों में झगड़ा हुआ और श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ने हिन्दू-मुस्लिम एकता लाने के प्रयत्न में अपना जीवन बलिदान कर दिया ।

मैं इस बात से इत्तिफाक करता हूं कि कांग्रेस को या किसी को भी राष्ट्रीय दल को किसी भी ऐसी जमात से जो कि आपस में झगड़ा फसाद करने वाली हो जैसे कि मुस्लिम लीग है, उससे कोई संगठन या फैसला नहीं करना चाहिए । मैं आज इस सदन मे स्वीकार करता हूं कि यह हमारी भूल हो गई थी कि गवर्नमेंट के वास्ते मुस्लिम लीग के साथ हमारा एक तरीके से संगठन बन गया था । उसके कारण देश को भी नुकसान हुआ और हमारी कांग्रेस को भी नुकसान पहुंचा है इसको स्वीकार करने में मुझे कोई ऐतराज नहीं है । हमने यह संगठन उनके साथ इस आशा से बनाया था कि शायद मुस्लिम लीग के लोगों को हम सही रास्ते पर ले आयेंगे लेकिन हमने आगे चल कर देखा कि हमारी ऐसी आशा करन बेकार साबित हुआ । इसलिए कांग्रेस का फैसला हमेशा के लिए हो गया है कि वह अब कभी भी किसी भी परिस्थिति में किसी ऐसी जमात के साथ मेल अथवा संगठन कायम नहीं करेगी जो कि फिरके-वाराना सवाल पैदा करने वाली जमात हो ।

जहां तक इस बात का ताल्लुक है कि कोई एक राष्ट्रीय दिवस मनाया जाय, मैं उसकी ताईद करता हूं । लेकिन शहीदों के अलग अलग दिन मनाने के लिए यदि बहुत सारे दिन रक्खे जायेंगे तो यह जरा मुश्किल हो जायगा ।

महात्मा गांधी की हत्या भी इसी हिन्दू-मुस्लिम एकता को लाने के प्रयत्न में हुई है । वे भी मुसलमानों की रक्षा करने की कोशिश करते थे और गांधी जी की हत्या भी उसी तरह से हुई है जैसे कि श्री गणेश शंकर विद्यार्थी की हुई थी । चूंकि गांधी जी की हत्या ३० जनवरी को हुई थी इसलिए देश में ३० जनवरी का दिन शहीद दिवस के तौर पर मनाया जाता है और मैं चाहता हूं कि मेरे मित्र मुझ से इसमें सहमत हो जायें कि चूंकि श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के सामने भी हिन्दू-मुस्लिम एकता और राष्ट्रीय एकता का आदर्श था और गांधी जी के सामने भी वही राष्ट्रीय एकता की बात थी इसलिये मैं चाहूंगा कि यह ३० जनवरी का दिन बजाय इसका नाम शहीदी दिन रखने के इसका नाम राष्ट्रीय एकता दिवस रख दिया जाय । इस राष्ट्रीय एकता के दिन गांधी जी और उनके साथ साथ जितनी अन्य कुर्बानियां एकता के खातिर हुई हैं उन सब की याद उसी दिन मनाई जाय और उस राष्ट्रीय एकता के दिवस पर सारे देशवासी और बच्चे जितने भी इकट्ठे हो सकें स्कूल, कालिजों में और अन्य जगहों पर

[श्री त्यागी]

एकत्रित हो कर राष्ट्रीय एकता की शपथ लें और हर साल उस दिन वह शपथ देश वासियों द्वारा दुहरायी जाय ताकि हमारी राष्ट्रीय एकता सही मायनों में कायम हो सके । इसलिये मेरी तो यह राय है कि बजाय इसके कि अलग अलग दिन रखे जांय यह बहतर होगा कि इस ३० जनवरी के शहीदी दिन का नाम ही राष्ट्रीय एकता दिवस रख दिया जाय ।

Mr. Deputy-Speaker: The hon. Minister.

Shri Indrajit Gupta (Calcutta—South —West): Sir, I wanted to speak.

Mr. Deputy-Speaker: Unless he rises, how am I to call him?

Shri Indrajit Gupta: Sir, I rose but your eyes were not on this side.

Mr. Deputy-Speaker: I had my eyes on that side. Anyhow, let him also speak.

Shri Indrajit Gupta: Sir, I only wanted to take a few minutes in order to take this opportunity to remind the House, particularly the members of the ruling party, of what the Prime Minister has said.

Shri Tyagi: They are the serving party and not the ruling party.

Shri Indrajit Gupta: I want to remind the House of the words written by no less a person than Pandit Jawaharlal Nehru in his autobiography referring to this incident when Shri Ganesh Shankar Vidyarthi laid down his life. It is good to remember these things sometimes. May I just quote a few lines from the autobiography of Pandit Jawaharlal Nehru?

> "While we were all at Karachi news had come of the Hindu-Muslim riots at Cawnpore, to be followed, soon after, by the report of the murder of Ganesh Shankar Vidyarthi by a frenzied mob of persons whom he was trying to help. Those terrible and brutal riots were bad enough, but Ganeshji's death brought them home to us as nothing else could have done. He was known to thousands in that Congress camp and to all of use of the U.P. he was the dearest of comrades and friend, brave and intrepid, farsighted and full of wise counsel, never downhearted, quietly working away and scorning publicity and office and the limelight."
>
> "In the pride of his youth he willingly offered his life for the cause he loved and served, and foolish hands struck him down, and deprived Cawnpore and the province of the brightest of their jewels. There was gloom over our U.P. Camp in Karachi when this news came; the glory seemed to have departed. And yet there was pride in him that he had faced death so unfalteringly and died so gloriously."

These are the words of Pandit Nehru and therefore I think it is a fitting occasion when Shri Banerjee has brought this Resolution is decide that we should do something, however late it may, to honour his memory. My hon. friend Shri Tyagi seemed to express a view that if we started commemorating the memory of so many martyrs in our country it may be very difficult. But I want to point out that the martyrs in our Independence Struggle are legion; they may run into lakhs. But he is a special type of martyr who gave his life for communal harmony and this type of martyrdom does not run into hundreds of thousands; it may be counted on your figures. Therefore, at this time when this monster of communal discord is raising its head afresh in our country, we should consider it. During the last few months we have had these incidents repeated in our country once again. Even on the very morrow of the national integration conference in Delhi, the very next day, a conflagration was let loose again in this very

State of U.P. where Vidyarthiji laid down his life. There are not only Hindu Muslim riots. In Assam also, we have seen that a new type of provincial riot has also been engineered. Whatever it may be communalism or provincialism, if sections of our people are being incited to a point where they commit violence against each other, raise their hands against each other, it is not time for us to come together and devise all possible ways and means by which we can educate our people, especially the younger generation who may be strangers to the traditions of Ghandhiji and Vidyarthiji? Should we not use all possible forms and methods of educating them and putting them on guard against this evil? I do not suggest that simply by commemorating a day, we will be able to solve this problem or, for that matter, neither can it be solved merely by setting up a national integration committee and holding a conference. We are all struggling to find some method and means. We read in the papers that it is particularly the youth of the country who indulge in such things; it is so disquieting that the school children and college boys had been drilled and trained by certain militant communalist bodies and given uniforms to drill in the Military type and trained how to wield lathis and knives. We read the statement of the Home Minister of U.P. after the riots in Aligarh and Chandausi. How do we propose to stop the youth of our country going astray if we do not adopt means of educating them against these evils? The fate of Shri Banerjee's resolution depends in the last resort on my friends opposite. I do not know what they will do or say. But I would appeal to them that this Resolution is a worthy Resolution and should commend itself to all sections of this House. I hope that the hon. Minister will receive it favourably.

The Minister of State in the Ministry of Home Affairs (Shri Datar): Mr. Deputy Speaker, I associate myself wholeheartedly with the noble sentiments expressed by the hon. Mover as also the other Members of this House on this Resolution. Shri Ganesh Shanker Vidyarthi, a great leader of U.P. was murdered in the cause of Hindu-Muslim unity. Exactly 31 years ago, as my friend pointed out, there were communal riots on the 25th of March 1951 and he roused Muslims from the predominantly Hindu mohallas and Hindus from the predominantly Muslim mohallas. All the same, as we are all aware, there were violent crowds and a group of 300 people very unfortunately surrounded this great hero and killed him on the streets of Kanpur itself. The body was recovered only after three days unfortunately. Therefore, we have a great name; a great social and public worker and the editor of a Hindi daily. He laid down his life for the purpose of Hindu-Muslim or communal harmony. Here is a great name which we have all to remember, and we must always be ready to do whatever is possible for bringing in national integration in the fullest sense of the term.

Then, I may point out to my hon. friend, the Mover of this Resolution, that there are certain difficulties in accepting the Resolution. One difficulty is this; the hon. Member has stated that it should be declared as the National Integration Day. Another hon. friend, Shri Tyagi, has pointed out that the better course would be to have a common national day, or, I might observe, a martyrs' day, in memory of those who died in the cause of India's freedom and communal harmony, and the names of all those persons will naturally be associated together on that day.

Secondly, so far as this Resolution is concerned, it requires to be pursued. The details also have to be worked out. Last year, in October, we had a national integration conference. That conference has appointed a 37-member national integration council. I would assure the hon. Member that I would bring this Resolution of the hon.

[Shri Datar]

Member to the attention of the national integration council. I am confident that they would advise the Government properly. So far as the question of integration is concerned, the matter would be considered from the fullest point of view, or, what can be stated as an integrated point of view, not only in the light of the money of, and the honouring of the late Ganesh Shankar Vidyarthi, but in the great cause of India's integration.

Under the circumstances, after the assurances that I have given to my hon. friend and after having fully associated myself with the expression of the high opinion in which this great act of martyrdom has been held by all sections of the Indian population, I am confident that my hon. friend will agree to withdraw this Resolution. I would not like this Resolution to be defeated.

श्री स० मो० बनर्जी : उपाध्यक्ष महोदय मुझे बड़ी खुशी है कि तमाम सदस्यों ने इस प्रस्ताव का, या जिन भावों पर मैं प्रकाश डालने की कोशिश की है, उन का समर्थन किया है । मैं यह नहीं चाहता कि गणेश शंकर विद्यार्थी के बारे में जो प्रस्ताव मैं ने रखा है, उस पर मैं इस सदन को विभाजित करूं, क्योंकि मैं समझता हूं कि हमारे देश में नेशनल इन्टेग्रेशन और साम्प्रदायिकता के खिलाफ लड़ाई पूरे देश की चीज है और मैं इस को राजनीति से बिल्कुल अलग रखना चाहता हूं । अगर हम राजनीति से ऊपर उठ कर नेशनल इन्टेग्रेशन की कोशिश नहीं करेंगे, तो हमारे तमाम जजबात बाहर निकल जायेंगे, और हम उन को रोक नहीं सकेंगे और न ही उन पर अमल कर सकेंगे ।

अफसोस यह है कि अगर एक मार्टर्ज डे या शहीद दिवस ऐसा मनाया जाये, जिस में देश की आजादी के लिये लड़ने वालों और कम्युनल हार्मनी –साम्प्रदायिक एकता– कायम रखने की कोशिश करने वालों, इन दोनों को मिला दिया जाये, तो मैं समझता हूं कि प्रस्ताव के पीछे मेरी जो भावना है वह शायद पूरी न हो । हो सकता है कि वह मेरी गलती और ना समझी हो । लेकिन फिर भी मैं दरख्वास्त करूंगा कि इस प्रस्ताव और इस पर हुई बहस को नेशनल इन्टेग्रेशन कौंसिल क पास भेजा जाये । मैं समझता हूं कि वह इस पर विचार करेगी ।

मैं चाहता था कि २५ मार्च को ऐसे दिवस के रूप में मनाया जाये कि जब गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद छोटे छोटे बच्चे यह गाते हुए प्रभात-फेरी करें कि मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर करना, हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा" । इस प्रकार २५ मार्च देश के लिए एक बहुत अच्छा और बहुत गर्व का दिवस हो जाता । मैं विद्यार्थी जी की तुलना गांधी जी से नहीं करना चाहता । गांधी जी के मृत्यु दिवस को मार्टर्ज डे के रूप में मनाया जाता है लेकिन विद्यार्थी जी के मृत्यु दिवस को मैं चाहता हूं कि इंटेग्रेशन के रूप में मनाया जाए ।

मैं दोहराना चाहता हूं कि जो साम्प्रदायिकता पर विश्वास करते हैं और उस पर जो चल रहे हैं, वे जिस तहजीब और तमद्दन के ऊपर जाना चाहते हैं और जो संकुचित विचारधारा को छोटे छोटे बक्सों में भरना चाहते हैं, उनका मुकाबला करने के लिये उन सभी लोगों को एक होना होगा जो साम्प्रदायिकता पर विश्वास नहीं करते हैं और उन को हमें कहना होगा ।

तुम्हारी तहजीब अपने खंजर से आप ही खुदकशी करेगी ।

जो शाखे नाजुक पर आशियाना बनेगा, ना पाएदार होगा ।

मैं समझता हूं कि जिन पार्टियों की पैदाइश, गांधी जी के कत्ल के बाद हुई वे

आज अगर देश की बात करें, देश की विचारधाराओं की बात करें तो यह एक गलत बात होगी । मैं यह नहीं कहता कि वे गलती कर रहे हैं, लेकिन वे गुमराह जरूर हैं इसी दिन को मनाने के बाद मैं समझता हूं हम लोग जरूर अपने मंजिले मकसूद पर पहुंच सकते हैं ।

जो आश्वासन मंत्री महोदय की तरफ से दिया गया कि वह इस को नेशनल इंटेग्रेशन काउन्सिल के पास भेजेंगे, उस को मैं स्वीकार करता हूं और जिन मुअज्जिज दोस्तों ने इस का समर्थन किया है, उन की इजाजत से और साथ ही साथ आप की इजाजत से मैं अपने इस रेज्योल्यूशन को वापस लेता हूं । मैं नहीं चाहता कि विद्यार्थी जी के इस प्रस्ताव के भी उसी तरह से टुकड़े टुकड़े कर दिये जायें जिस तरह से विद्यार्थी जी के टुकड़े टुकड़े कर दिये गये थे । मैं नहीं चाहता कि इस प्रस्ताव के टुकड़े टुकड़े हों । मैं चाहता हूं कि यह प्रस्ताव इसी तरीके से रहे । जो भावनायें यहां पर व्यक्त की गई हैं उन को मैं विद्यार्थी जी के शहर कानपुर में जहां की जनसंख्या आज दस लाख है जा कर रखूंगा । मैं आशा करता हूं कि काउन्सिल में जा कर इसका कोई उचित फैसला होगा और काउन्सिल के मैम्बर भी इस का समर्थन करेंगे । पोलिटिकल पार्टीज जो यहां है और जो काउन्सिल में भी हैं, उन से मैं निवेदन करता हूं कि वे अवश्य इस का समर्थन करें ।

इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव को वापस लेता हूं ।

The resolution was, by leave, withdrawn.

16.43 hrs.

RESOLUTION *RE* NATIONALISATION OF FILM INDUSTRY

श्री अ० मु० तारिक : (जम्मू तथा काश्मीर): वक्त के बारे में जनाब क्या—

उपाध्यक्ष महोदय : पन्द्रह मिनट है, चाहें तो आप ले लें और चाहें तो पांच मिनट लें और कुछ समय दूसरों को दें ।

श्री अ० मु० तारिक : पांच मिनट मैं लेता और बाकी मिनिस्टर साहब ले लें । मेरा रेज्योल्यशन इस तरह से है—

> "यह हाउस सरकार से मांग करता है कि फिल्म इंडस्ट्री के नेशनेलाइजेशन के सवाल पर गौर करने के लिये पार्लियामेंट के मैम्बरों और फिल्म इंडस्ट्रियलिस्टों की एक कमेटी बनाई जाये ।"

इस सिलसिले में एस्टीमेट्स कमेटी ने अपनी १९६१–६२ की १५९ वीं रिपोर्ट में पैरा ९० में जो बात कही है उस की तरफ मैं आप की तवज्जह दिलाना चाहता हूं । उस ने कहा कि मौजूदा दुनिया में हिन्दुस्तान एक ऐसा तीसरा मुल्क है जहां फिल्म इंडस्ट्री काफी फैली हुई है । इस के साथ ही उस ने यह भी कहा है कि हमारे फिल्म बनाने वालों का जो रुझान है वह पैसा बनाने की तरफ ज्यादा है इंडस्ट्री की खिदमत करने की तरफ कम है । आगे चल कर उस ने सिफारिश की है कि ऐसी काउन्सिल बनाई जाये जो फिल्म इंडस्ट्री के मामलात में जाये ।

जहां तक फिल्म इंडस्ट्री का ताल्लुक है, इस में कोई शक नहीं है कि मुहज्जब मुल्कों में जहां यूनिवर्सिटियां या दरगाहें कौमों को बनाती हैं वहां इस काम में फिल्में भी काफी पार्ट अदा करती हैं । इस लिहाज से हमारा यह फर्ज हो जाता है कि हम इस मसले पर गौर करें ।

जहां तक हमारे मुल्क का ताल्लुक है, यह इंडस्ट्री ऐसे लोगों के हाथ में है जो फिल्म लाइन से बिल्कुल नावाकिफ है । बहुत से लोग ऐसे हैं जो इस के बारे में कुछ भी नहीं जानते हैं, कुछ भी नहीं पढ़ा है, लेकिन पैसे के बलबूते